दिव्यास्त्र

अपने गर्म मिजाज के चलते मिताली ऋषभ के साथ नहीं रह पायी। विधिवत डिवोर्स हो गया। मायके लौट आयी। यहाँ भी उसका मिजाज यथावत था; कहीं कुछ जॉब भी नहीं था उसका। अब खाली दिमाग शैतान का घर वाली बात हो गयी। उसे अक्षय की याद आयी।

फिर मिताली ने अक्षय से मिलना शुरू कर दिया। एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी एम्पलॉय अक्षय मिताली से अब कोई रिश्ता नहीं रखना चाहता था। उसे समझाया करता था- " मिताली ! मुझसे दूर रहने का फैसला तुमने खुद किया था। अपनी राह तुमने खुद चुनी थी। अब मेरा अपना घर-संसार है। बीवी है। मेरे दो मासूम बच्चे हैं। अब यह सब सम्भव नहीं है मिताली|" मिताली को अक्षय की इस तरह की बातों से कोई मतलब नहीं था। अपनी आदतन जिद व मन-माफिक अंदाज से हर हाल में वह अक्षय को पाना चाहती थी। उसने एक दिन बोल ही दिया- "अक्षय ! मैं तुम्हारे पास आना चाहती हूँ। तुम किसी और के नहीं हो सकते। तुम्हें मुझे स्वीकार करना ही होगा|"

अक्षय बोला- "तुम कैसी बात करती हो मिताली ? क्या तुम मुझे बर्बाद ही करना चाहती हो ?"

कड़े तेवर में मिताली बोली- "तुम्हें आबाद भी नहीं होने दूँगी। हमारे बीच तीन साल का सम्बंध रहा है। तुम भी जानते हो। इसलिए न...!"

"... इसलिए आखिर क्या कर लोगी ? तुम्हें मेरी बातें समझ नहीं आतीं ?" अक्षय का स्वर भी सख्त हो चुका था।

अक्षय की बातें सुन मिताली गुस्से से उबलने लगी। अब तो उसने अक्षय पर अपने अमोघ दिव्यास्त्र दुष्कर्म का आरोप से प्रहार करने का मन बना लिया था।

----//----

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
व्याख्याता (अंग्रेजी)
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

कोई बात नहीं

भूषण खाना खाकर उठा। सोफे पर बैठकर मोजे को पहनने के लिए झड़ना लगा। सुखिया समझ गयी कि आज उसे ड्यूटी जाने में देर हो गयी। बोली - "बारिश का मौसम है। बदली छा रही है। पता नहीं बेटा, कब और पानी गिर जाएगा|" भूषण एक थैले में कुछ रखा और चलने लगा ।

"रूको बेटा, इसे पहन लो, क्योंकि मौसम का कोई ठिकाना नहीं है। शायद तुझे सर्दी भी तो है|" कहते हुए सुखिया ने बाइक की डिक्की में रेनकोट को डाल दी। भूषण के चलने की आहट प्रतिभा के कानों पर पड़ी। झट से कमरे से बाहर आयी- "अजी...! अपना लंच बॉक्स तो रख लो। बड़े भुलक्कड़ हो गये हो आजकल|" कहते हुए तिरछी नजरों से मुस्कुरा दी। बाइक स्टार्ट करते भूषण पर सौम्या की नजर पड़ी। दौड़ कर आयी। मुस्कुरायी - "पापा जी, हेलमेट तो पहन लीजिए। आराम से जाइएगा, है ना|" एक विशेष संरक्षण तले भूषण घर से निकला।

शाम होते ही घर में भूषण का इंतजार होने लगा। बारिश बंद हो चुकी थी। आसमान भी साफ था। रात हो रही थी। सबको चिंता सताने लगी थी। तीनों दरवाजे से झाँक ही रहे थे कि एक बाइक आकर रुकी। भूषण था। घर में दाखिल हुआ। टेबल पर खाली लंच बॉक्स और सामानवाला थैला रखा। पैर से जूते सरकाते हुए कहने लगा- "माँ, आपके चश्मे की डंडी नहीं लगवा पाया। दरअसल मैं जल्दी में था, भूल गया और हाँ, प्रतिभा तुमने अपने कमर दर्द के लिए मूव्ह मंगवाया था ना... क्या हुआ कि लौटते समय मेरी बाइक स्पीड थी। मेडिकल स्टोर्स को कितने समय क्रॉस किया, मैं समझ नहीं पाया|" प्रतिभा ने किचन से सुन लिया। होमवर्क करती सौम्या को सुनाई दिया- "सौम्या बेटी ,तेरी प्रोजेक्ट फाइल नहीं ला पाया। कल ले आऊँगा|" तभी अपनत्व भरा क्षम्य की ध्वनि तरंगे भूषण के कानों को स्पर्श करने लगी- "कोई बात नहीं बेटा, तू आ गया न बस..., छोड़ो न जी... कोई बात नहीं, कल ले आना मूव्ह को। ठीक है पापा जी, कोई बात नहीं, मैं स्कूल जाते समय खरीद लूँगी अपनी प्रोजेक्ट फाइल|"

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
व्याख्याता (अंग्रेजी)
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

मैं भी कभी

" दो सौ पेज की छः सामान्य कॉपी चाहिए। भूगोल के लिए एक बड़ी चाहिए; और गणित के लिए एक मोटी|"

नीरज ने दुकान वाले युवक से स्टेशनरी के कुछ और सामान निकलवाये। फिर दुकान वाले युवक ने पास में ही खड़े देवीचरण को सात सौ बयासी रूपए का बिल थमाया।

" सिर्फ तीन सौ पैंतीस हैं मेरे पास नीरज। एक काम करते हैं बेटा कुछ सामान को रहने देते हैं। बाद में ले लेंगे। कल तुम्हारी फीस भी तो देनी है न चार सौ तीस रूपए|" अपनी जेब की थाह लेते हुए कापियों को उठा-उठा कर देवीचरण देखने लगा।

नीरज बोला- " हमारी क्लास में सबने पूरी कॉपी-पुस्तकें खरीद ली है पापा। पढ़ाई भी शुरू हो गयी है। बहुत जरूरी है पापा ये सब|"

देवीचरण पल भर खामोश खड़ा रहा। तभी देवीचरण के बगल में खड़े एक अधेड़ शख्स बोले- " ले लो भाई, बच्चा जो लेना चाहता है। जितना आपके पास हैं , आप दे दो। बाकी मैं दे देता हूँ|"

" भैया ! आप भला क्यों ? मुझे अच्छा नहीं....|" देवीचरण के कुछ और कहने से पहले उस शख्स ने कहा- " कुछ नहीं भैया। कुछ कहने की जरूरत नहीं है। मैं सब समझता हूँ। मैं ऐसे हालात से गुजर चुका हूँ|"

आखिर उस अधेड़ शख्स की बातें देवीचरण ने मान ली। पिता-पुत्र दोनों सामान लेकर चलने लगे, तभी दुकान वाले युवक ने देवीचरण को चार सौ तीस रुपए थमाते हुए कहा- " चाचा जी। इसे रख लो। नीरज की स्कूल की फीस जमा कर देना। वो व्यक्ति जिन्होंने आपको मदद की है, मेरे पापा जी हैं। मैं भी कभी नीरज था चाचा|"

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
व्याख्याता (अंग्रेजी)
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)